LATEST EDITION

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पटवार

राजस्थान अधीनस्थ और मंत्रिस्तरीय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3 इतिहास (भारत एवं राजस्थान)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पटवार

राजस्थान अधीनस्थ और मंत्रिस्तरीय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग – 3

इतिहास (भारत + राजस्थान)

<u>प्रस्तावना</u>

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान पटवारी नोट्स"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा – 2023** में पूर्ण संभव मदद करेंगे ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/0yupe6

Online Order करें - https://shorturl.at/pwFNP

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम (2023)

	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत का इतिहास	
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार	1 – 6
2.	वैदिक काल	6 – 10
3.	छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा	11 – 16
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ	16 – 43
5.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	43 – 59
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	59 – 61
2.	सल्तनतकाल	62 – 75
3.	मुगलकालीन भारत	76 – 80
4.	मध्य काल में कला एवं वास्तु	81 – 86
5.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	86 – 91
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारत का विकास	92 – 113
2.	राष्ट्रवाद का उदय	113 – 137
3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं राष्ट्रीय आंदोलन	138 – 188
4.	स्वतंत्रता के आसपास का भारत एवं राष्ट्र निर्माण	189 – 194
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	194 – 213
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	214 – 224
3.	ऐतिहासिक राजस्थान	225 – 230
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	231 – 292
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	292 – 308
6.	आधुनिक राजस्थान	309 – 325
7.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	326 – 330

8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	331 – 340
9.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	341 – 353
10.	राजस्थान का एकीकरण	354 – 358

भारत का इतिहास

अध्याय – I

भारत के सांस्कृतिक आधार

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन :-

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्ययुगीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -**
  - प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
  - भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
  - मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।
- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

सभ्यता का विनाश	
नदी में बाढ़ के कारण	मार्शल
	मैके
	एस.आर.राव
बाह्य आक्रमण	गार्डन चाइल्ड
	व्हीलर
	पिगट
जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टाइन
	अमला नन्द घोष
प्राकृतिक आपदा -	केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र तक था।

अफगानिस्तान में सिंधु सभ्यता के स्थल

- शोर्तुघई और मुंडिगक अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के एकमात्र स्थल हैं।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब –** कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर मानरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल

- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगवार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार

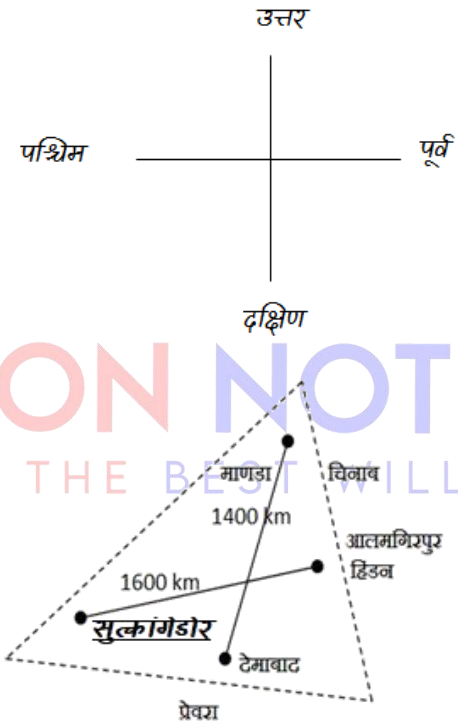

स्थल	नदियों के नाम	उत्खन्न का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)

रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी हैं।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**

रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

खोज- वर्ष **1921** में

उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया ।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग

- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं हैं?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन
C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
D. एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।
उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी। उत्खनन
  - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।

- **सम्यक चरित्र**
- जैनधर्म में पुनर्जन्म में विश्वास तथा कर्मवाद में विश्वास पर बल

संघ

- महावीर ने एक संघ की स्थापना की ।
- इस संघ के **11 अनुयायी** बने जो **गणधर** कहलाये।
- 11 में से 10 महावीर की मृत्यु होने से पहले मोक्ष प्राप्त कर चुके थे।
  एक ही जीवित था - सुधर्मण

जैन संगीतियां (सभायें)

प्रथम- 300 ई.पू.

- पाटलिपुत्र में
- चन्द्रगुप्त मौर्य (संरक्षक)
- अध्यक्ष – स्थूलभद्र
- जैन धर्म दो भागों में विभाजित
- **श्वेताम्बर** - सफेद कपड़े वाले
- **दिगम्बर** - नग्न रहने वाले
- 12 अंगों का संकलन किया गया था ।

द्वितीय - 512 ई.पू. /513/526 ई.पू.

- वल्लभी में
- क्षमाश्रवण (संरक्षक)
- जैन ग्रन्थों का अन्तिम रूप से संकलन
- मुख्य बिंदु कुल 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया ।

- **जैन धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र चम्पानगरी**
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने कर्नाटक में जैन धर्म का विस्तार किया।
- **चन्दना प्रथम जैन महिला भिक्षुणी**
- हाथी गुम्फा अभिलेख (खारवेल)
  प्रारम्भिक जैन अवशेष

अध्याय – 4

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

- **मौर्य वंश**

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**

- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था ।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था ।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था ।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सैंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था ।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।

अशोक महान

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था ।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था ।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं ।
- **अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।**
- सर्वप्रथम **मास्की लेख** में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।

कलिंग युद्ध

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- कलिंग विजय के नरसंहार से सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया।
- अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।
- **अभिलेखों की भाषा**
  - **प्राकृत (अधिकांश इसी भाषा में।)**
  - **यूनानी**
  - **अरामाइक**
- **अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।**
- अशोक के **वृहद शिलालेख** (पहाड़ियों पर) **। से 14 तक थे।**
- अशोक के प्रथम वृहद शिलालेख में पशु हत्या को निषेध बताया है।
- इसका 12वाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसके शासन काल में **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।**
- अशोक महान द्वारा प्रचारित की गई **नीतिगत शिक्षा को अशोक का धम्म** कहा गया।
- अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए भेजे गये प्रचारक -
  सोन एवं उत्तरा- स्वर्णभूमि में
  महेन्द्र एवं संघमित्रा- श्रीलंका
  महारक्षित - यवन प्रदेश
  रक्षित - वनवासी (उ० कनाडा)
- अशोक के बाद उसके उत्तराधिकारी निर्बल तथा कमजोर हुए। उन्होंने साम्राज्य का बंटवारा कर लिया। 50 वर्षों के भीतर ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल 9 श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है।

कालिदास

- संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य।
- कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** है। इसके अतिरिक्त उन्होंने **मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।**

भारवि

'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के वनपर्व पर आधारित है इसमें कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

इनके द्वारा रचित '**भट्टिकाव्य**' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार	नाटक का विषय
मालविकाग्निमित्रम्	**कालिदास**	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	**कालिदास**	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**कालिदास**	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसन्तसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वैश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	**भास**	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भारत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

- विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न भिन्न संस्करण निकल चुके हैं।
- **पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रन्थ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है।**
- 16 वीं शताब्दी के अंत तक इस ग्रन्थ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेजी भाषाओं में किया जा चुका था।
- **पंचतंत्र 5 भागों में बंटा है-**

1. मित्रभेद,
2. मित्रलाभ,
3. सन्धि-विग्रह,
4. लब्ध-प्रणाश,
5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रन्थ

पुराण

- *पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है।*
- *दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है।*
- *'भगवतगीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्तव्य पालन के निर्देश देती है।*

स्मृतियां

- *गुप्त काल में **याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गई।** इनमें 'याज्ञवल्क्य स्मृति' सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।*
- *इस स्मृति में आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का उल्लेख है। हीनयान (बौद्ध धर्म) शाखा के 'बुद्ध घोष' ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'विसुद्दिभग्य' है।*
- *जैन दार्शनिक आचार्य 'सिद्धसेन' ने **न्याय दर्शन** पर 'न्यायवताम्' ग्रन्थ लिखा है।*

गुप्तकालीन तकनीक ग्रन्थ

रचनाकार	***रचना***
चन्द्रगोमिन	*चन्द्र व्याकरण*
अमर सिंह	*अमरकोष (संस्कृत का प्रमाणित कोष)*
कामन्दक	***नीतिसार** (कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रभावित)*
वात्स्यायन	***कामसूत्र***

विज्ञान

गुप्त काल में खगोल शास्त्र, गणित तथा चिकित्सा शास्त्र का विकास भी अपने उत्कर्ष पर था।

वराहमिहिर

मुख्य लेख : वराहमिहिर

*गुप्त काल के **प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वराहमिहिर** हैं। इनके **प्रसिद्ध ग्रन्थ वृहत्संहिता तथा पञ्चसिद्धन्तिका हैं।** वृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्रम्, प्राकृतिक इतिहास, भौतिक भूगोल जैसे विषयों पर वर्णन है।*

आर्यभट्ट

मुख्य लेख : आर्यभट्ट

- ***'आर्यभट्टीय' नामक ग्रन्थ की रचना करने वाले आर्यभट्ट अपने समय के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। इन्होंने***
- ***दशमलव प्रणाली का विकास किया।** इनके प्रयासों के द्वारा ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका।*
- *आर्यभट्ट ऐसे **प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने** यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है।*
- *इन्होंने सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण होने वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला। **आर्यभट्ट ने सूर्य सिद्धान्त लिखा।***
- *आर्यभट्ट के सिद्धान्त पर भास्कर प्रथम ने टीका लिखी। भास्कर के तीन अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं- 'महाभास्कर्य','लघुभास्कर्य 'एवं' भाष्य' ।*
- *ब्रह्मगुप्त ने 'ब्रह्म-सिद्धान्त' की रचना कर बताया कि 'प्रकृति के नियम के अनुसार समस्त वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं, क्योंकि पृथ्वी अपने स्वभाव से ही सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकृषित करती है।*
- *यह न्यूटन के सिद्धान्त के पूर्व की गयी कल्पना है।* ***आर्यभट्ट, वराहमिहिर एवं ब्रह्मगुप्त को संसार के सर्वप्रथम नक्षत्र-वैज्ञानिक और गणितज्ञ कहा गया है।***

चिकित्सा ग्रन्थ

*चिकित्सा के क्षेत्र में **वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अष्टांग हृदय' की रचना की।** आयुर्वेद के एक और ग्रन्थ 'नवीनतकम्' की रचना भी गुप्त काल में हुई ।*

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार का प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य एवं चिकित्सक 'धन्वंतरि' था।

गुप्तकालीन चिकित्सकों को 'शल्य शास्त्र' के विषय में जानकारी थी।

गुप्त काल में अणु सिद्धान्त का भी प्रतिपादन हुआ।

गुप्त काल स्वर्ण काल के रूप में

- *गुप्त काल को स्वर्ण युग, क्लासिकल युग, एवं पेरीक्लीन युग, कहा जाता है।*
- *अपनी जिन विशेषताओं के कारण गुप्तकाल को **'स्वर्णकाल'** कहा जाता है, वे इस प्रकार हैं- साहित्य, विज्ञान, एवं कला के उत्कर्ष का काल, भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार का काल, धार्मिक सहिष्णुता एवं आर्थिक समृद्धि का काल, श्रेष्ठ शासन व्यवस्था एवं महान सम्राटों के उदय का काल एवं राजनीतिक एकता का काल, इन समस्त विशेषताओं के साथ ही हम **गुप्त***

को स्वर्णकाल, क्लासिकल युग एवं पेरीक्लीन युग कहते हैं ।

- कुछ विद्वानों जैसे आर. एस. शर्मा, डी. डी. कौशम्बी एवं डॉ. रोमिला थापर गुप्त के 'स्वर्ण युग' की संकल्पना को निराधार सिद्ध करते हैं क्योंकि उनके अनुसार यह काल सामन्तवाद की उन्नति, नगरों के पतन, व्यापार एवं वाणिज्य के पतन तथा आर्थिक अवनति का काल था।

चालुक्य वंश

- चालुक्य अभिलेखो में इन्हें हारीति पुत्र एवं मानत्यगोत्रीय कहा जाता है, यह वंश मूलतः अयोध्या का था ।
- चालुक्य शासक अयोध्या को अपने पूर्वजों का मूल निवास मानते थे ।
- चालुक्य वंश चार शाखाओं में विभाजित था ।
- बादामी या वातापी के चालुक्य वंश वेंगी के चालुक्य वंश कल्याणी के पश्चिम के चालुक्य वंश तथा अन्हिलवाड़ा [लाट] के चालुक्य सोलंकी ।

वातापी या बादामी के चालुक्य

- **चालुक्यों की मूल शाखा वातापी या बादामी का राजवंश था ।** गुप्त काल के बाद दक्षिण भारत में लगभग 550 ई. से 750 ई. तक केवल दक्षिण भारत की राजनीति को भी वातापी के चालुक्यों ने प्रभावित किया ।
- बादामी के चालुक्य वंश के इतिहास के प्रमाणिक साक्ष्य अभिलेख हैं । इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुलकेशिन द्वितीय का एहोल अभिलेख है ।
- इनकी भाषा संस्कृत एवं लिपि दक्षिण ब्राह्मी है । इस लेख की रचना रविकीर्ति ने की थी । यद्यपि मुख्य रूप से इनमें पुलकेशिन द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन हुआ है ।

पुलकेशिन प्रथम

- चालुक्य वंश का संस्थापक वैसे तो जयसिंह था परन्तु वातापी या बादामी के आस-पास के क्षेत्रों को मिलाकर एक छोटे राज्य की स्थापना कर **चालुक्य वंश की वास्तविक नींव डालने वाला पुलकेशिन प्रथम था ।**
- उसने वातापी या बादामी को अपनी राजधानी बनाया था । अश्वमेघ यज्ञ भी किया था ।
- उसके पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम ने वनवासी के कदम्बों कोकण के मौर्यों एवं बेलारी तथा कर्नुलों को युद्ध में पराजित किया ।
- कीर्तिवर्मन का भाई मंगलेश अगला शासक बना तथा इसने कलचुरियों तथा कदम्बों को पराजित किया तथा उसका उत्तराधिकारी उसका भतीजा पुलकेशिन द्वितीय बना ।

पुलकेशिन द्वितीय :-

यह पुलकेशिन वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं योग्य शासक था । इससे संबंधित जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है ।

- वह अपने चाचा मंगलेश (कीर्तिवर्मन का भाई) के खिलाफ युद्ध छेड़ने के बाद 608 ई. में सिंहासन पर बैठने के लिए आया था ।
- कीर्तिवर्मन का पुत्र पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था । पुलकेशिन द्वितीय ने सत्याश्रय श्री पृथ्वी वल्लभ महाराज एवं दक्षिणापथेश्वर की उपाधि धारण की थी ।
- वह हर्षवर्द्धन (पुष्यभूति राजवंश का शासक) का समकालीन था ।
- हमें पुलकेशिन द्वितीय के बारे में जानकारी उसके दरबारी **कवि रविकीर्ति द्वारा प्राकृत भाषा में रचित ऐहोल नाम** के एक प्रशस्ति से पता चलता है। पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्द्धन को नर्मदा के तट पर हराया था और लट, मालव और गुर्जरों की स्वैच्छिक हार को स्वीकार किया था ।
- शुरू में वह पल्लवों के खिलाफ विजय हासिल किया था, लेकिन पल्लव शासक नरसिंहवर्मन ने न केवल उसे पराजित किया बल्कि, बादामी पर कब्जा भी कर लिया नरसिंहवर्मन ने वातापिकोंडा की उपाधि ग्रहण की ।
- पुलकेशिन द्वितीय की प्रसिद्धि फारस तक चर्चित थी जिनके साथ उसने अपने दूतों का आदान-प्रदान भी किया ।
- हेनसांग (चीनी यात्री) ने पुलकेशिन द्वितीय के दरबार का दौरा किया था ।

ऐहोले शिलालेख :

- यह शिलालेख पुलकेशिन द्वितीय के पूर्वजों के बारे में संबंधित है । इस प्रशस्ति में पिता से लेकर पुत्र तक की चार पीढ़ियों के बारे में उल्लेख करता है ।
- इस प्रशस्ति में रविकीर्ति बताता है कि, पुलकेशिन द्वितीय ने अपने अभियान का नेतृत्व किया पश्चिम और पूर्व दोनों के किनारे-किनारे किया था ।
- एहोल अभिलेख से ज्ञात होता है की पुलकेशिन द्वितीय ने लाट नाट मालव तथा गुर्जर प्रदेशों को भी जीत लिया।
- लाट राज्य दक्षिण गुजरात में स्थित था । इसकी राजधानी नौसरी बड़ौदा गुजरात में थी ।
- वहां अधिकार करने के बाद पुलकेशिन ने अपने वशं के ही किसी व्यक्ति को लाट प्रदेश का शासक नियुक्त किया ।

अध्याय – 3

मुगलकालीन भारत

मुग़ल काल (1526-1707)

राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह -अफगान

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी । **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ ।**

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था ।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई ।
  नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया ।
- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था । भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था ।**
- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज़्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी । इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था ।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है ।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। **साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529**

ताना भगत आंदोलन

- ताना भगत आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1914 ई. में बिहार में हुई थी। **यह आंदोलन लगान की ऊँची दर तथा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया** था।
- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के क़रीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन ' शुरू हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**
- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरूप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

पहाड़ियाँ विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ ।
- **आदिवासियों के छापामार सघंर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया।**

बस्तर का विद्रोह

- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया ।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।**

1857 ई. का विद्रोह

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी ।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है। तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है ।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी ।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे ।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये ।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धान्त या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया। उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना। सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना। आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया। उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार :-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था।
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था। इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं। तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी।

(8) उच्च वर्ग में असंतोष:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ।

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था। नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई। लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था। अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये। यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे।** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रूपये प्रति माह वेतन मिलता था।
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/- रूपये प्रति माह वेतन मिलता था। उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था। विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार

(7) जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार :-

- अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था । जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था। 1845 ई. में एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया ।
- उस समय प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था । इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे । जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे।

तात्कालिक कारण

- उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असन्तोष के कुछ अलग कारण भी थे ।
- अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी ।
- **1856 ई. में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूकों को हटाकर नई 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा । उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था । इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था ।** यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नहीं माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ ।
- यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी । उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं । अतः उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा ।
- इस प्रकार, **कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी ।** सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया ।

विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

- **सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई ।** यहाँ के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया।
- **29 मार्च, 1857 ई. को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला ।**
- परिणाम स्वरूप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई । उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई । बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया ।
- सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया । मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रवाना हुए ।

दिल्ली

- 11 मई 1857 ई. को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी । विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये । वैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी ।
- **विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की ।** मुग़ल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुँचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई ।
- लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया । अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुग़ल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी ।
- मुग़ल शहजादों मिर्जा मुग़ल , मिर्जा खिजिर, सुल्तान और मिर्जा अबूबकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया ।
- उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का मौका है । मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

अवध

- **मेरठ** की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुँची । उस समय सर **हेनरी लॉरेंस वहां का चीफ कमिश्नर था ।**
- उसने विद्रोह के संकट से बचने के लिए आवश्यक प्रयास किये लेकिन लखनऊ में भी विद्रोह को लम्बे समय तक टाला नहीं जा सका ।
- 30 मई को लखनऊ से कुछ मील दूर मुरिआव छावनी में देशी सिपाहियों ने यूरोपीय फौज पर सशस्त्र हमला कर दिया । इसमें कुछ लोगों की जान गई ।
- **विद्रोह लखनऊ तक ही सीमित नहीं रहा । जल्द ही यह सीतापुर, फैजाबाद, बनारस, इलाहाबाद,**

आजमगढ़, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा, बरेली, फर्रुखाबाद, बिजनौर, शाहजापुर, मुज्जफरनगर, बदायूँ, दानापुर आदि क्षेत्र में, जहां भारतीय सैनिक तैनात थे, वहाँ फैल गया ।

- *सेना के विद्रोह करने से पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन भी तितर-बितर हो गया। जहां भी विद्रोह भड़का सरकारी खजाने को लूट लिया गया और गोले-बारूद पर कब्जा कर लिया गया । बैंरकों, थाने के राजस्व कार्यालयों को जला दिया गया, कारागार के दरवाजे खोल दिये गये ।*
- *गाद के किसानों तथा बेदखल किये गये जमींदारों ने साहूकारों एवं नये जमींदारों, जिन्होंने उन्हें बेदखल किया था हमला कर दिया । उन्होंने सरकारी दस्तावेजों तथा साहूकारों के बही खातों को नष्ट कर दिया अथवा लूट लिया ।*
- *इस प्रकार क्रांतिकारियों ने औपनिवेशिक शासन के सभी चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया । जिन क्षेत्रों के लोगों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया उनकी सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी।*

<u>कानपुर</u>

- ***5 जून 1857 ई. को कानपुर में विद्रोह हुआ। कानपुर में क्रांति का नेतृत्व नाना साहब ने किया।*** *उन्होंने 26 जून को कानपुर पर अधिकार स्थापित कर लिया और स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया।*
- *बहादुर शाह को नाना ने भी भारत का बादशाह मान लिया था। **कानपुर के अंग्रेज सेनापति कीलर को नाना साहब ने आत्म-समर्पण करने पर बाध्य कर दिया ।***
- *जुलाई 1857 में हैवलाक ने कानपुर पर आक्रमण कर दिया और घोर संघर्ष के बाद कानपुर पर अधिकार कर लिया।*
- ***नवम्बर 1857 में ग्वालियर के 20,000 क्रांतिकारी सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर आक्रमण कर दिया*** *और वहाँ पर सेनापति विडहम को परास्त करके 28 नवम्बर को कानपुर पर पुनः प्रभुत्व स्थापित कर लिया ।*
- *दुर्भाग्यश दिसम्बर 1857 को कैम्पवेल ने क्रांतिकारियों को बुरी तरह परास्त किया और कानपुर पुन : अंग्रेजों के हाथ में आ गया। नाना साहब वहां से नेपाल चले गये ।*

<u>झांसी</u>

- ***झांसी में विद्रोह का प्रारम्भ 5 जून 1857 को हुआ। रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बुन्देलखण्ड तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया।***
- ***बुन्देलखण्ड में विद्रोह के दमन का कार्य ह्यूरोज नामक सेनापति को सौंपा गया था।*** *उसने 23 मार्च 1857 को झांसी का घेरा डाल दिया ।*
- *एक सप्ताह तक युद्ध चलता रहा लक्ष्मीबाई के मोर्चा संभालने वालों में सिर्फ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही नहीं थे कोली, काछी और तेली भी थे ये महाराष्ट्रीय और बुन्देलखण्डी थे ये पठान तथा अन्य मुसलमान थे ।*
- *पुरूषों के साथ हर मोर्चे पर महिलाएं भी थी । झांसी की सुरक्षा असंभव समझकर लक्ष्मीबाई 4 अप्रैल 1858 को अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ से बांधकर एक रक्षक दल के साथ शत्रु सेना को चीरती हुई कालपी पहुँची ।*
- *तात्या टोपे, बांदा के नबाव बाणपुर तथा शाहगढ़ के राजा व अन्य क्रांतिकारी नेता भी कालपी विद्यमान थे । यहाँ ह्यूरोज के साथ भयंकर युद्ध हुआ जिसमें विजय अंग्रेजों को मिली ।*
- *मई 1858 को रानी ग्वालियर पहुँची सिंधिया अंग्रेजों का समर्थक था किन्तु उसकी सेना विद्रोहियों के साथ हो गई । जिसकी सहायता से रानी ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया और ग्वालियर की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई ।*

<u>बिहार</u>

- ***बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुंवरसिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया था ।*** *उस समय उनकी आयु 70 साल थी । कुंवरसिंह को अंग्रेजों ने दिवालिएपन के कगार पर पहुँचा दिया था ।*
- *यद्यपि उन्होंने खुद किसी विद्रोह की योजना नहीं बनाई थी। लेकिन विद्रोही सैनिकों की टुकड़ी दीनापुर से आरा पहुँचने पर कुंवरसिंह उनके साथ मिल गये । जुलाई 1857 में उन्होंने आरा पर अधिकार कर लिया।*
- *मार्च 1858 में उन्होंने आजमगढ़ पर अधिकार जमाया । यह उनकी सबसे बड़ी सफलता थी। 22 अप्रैल 1858 ई को उन्होंने अपनी जागीर जगदीशपुर पर पुनः अधिकार कर लिया ।*
- *अन्त में उनकी जागीर में ही अंग्रेजों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया और वह संघर्ष करते हुए मारे गये । उनकी मृत्यु के समय जगदीशपुर पर आजादी का झण्डा फहरा रहा था ।*
- ***सम्पूर्ण भारत के विद्रोह में कुंवरसिंह ही एक ऐसे वीर थे जिन्होंने अंग्रेजों को अनेक बार हराया।***

राजपूताना

- ***राजपूताना में 28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में तथा 3 जून 1857 को नीमच में विद्रोह हुआ लेकिन विद्रोह का मुख्य केन्द्र कोटा और आउवा थे ।***

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौंने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।

- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।

- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी । नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए । जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ -

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं । इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे ।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था ।
(विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती है इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।

- यहाँ के लोग सिलाई से परिचित थे तथा कपड़ों पर रंग डालने का भी प्रयोग करते थे, अर्थात् यहाँ **रंगाई छपाई का** कार्य प्रचलन में था।
- यहाँ पर एक **चक्रकूप** पद्धति का प्रचलन था, जब घरों में पानी भर जाता था तब यहाँ के लोग एक गहरा गड्ढा खोदते थे, और उसमें मिट्टी के घड़े को एक के ऊपर एक रखते थे जिसके कारण उसका पानी इन घड़ों के द्वारा सोख लिया जाता था। इस पद्धति को **चक्रकूप पद्धति** कहते थे।

प्रश्न-आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए –

(A) आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।

(B) ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।

(C) धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।

(D) यहाँ से काले - लाल रंग मृद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए –

(1) A, B एवं C सही हैं

(2) A, C एवं D सही हैं

(3) A एवं B सही हैं

(4) C एवं D सही हैं

Ans. 2

4. बैराठ (जयपुर) :

- बैराठ जयपुर जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम **"विराट नगर"** ' था। महाजनपद काल में यह **मत्स्य जनपद** की **राजधानी** था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1936-37** में **दयाराम साहनी** द्वारा तथा **1962-63** में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की । वर्तमान में यह शिलालेख **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।
- **भाब्रू शिलालेख** में सम्राट अशोक को मगध का राजा 'नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे **बुद्ध, धम्म एवं संघ** लिखा हुआ है।
- बैराठ में **बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी** तथा **महादेव जी की डूंगरी** से उत्खनन कार्य किया गया ।
- यहाँ से मौर्य कालीन तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले है।
- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई है, जिनमें 8 **पंचमार्क चाँदी** की तथा **28 इण्डो-ग्रीक** तथा यूनानी शासकों की है । **16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर** की है।
- उत्तर भारतीय चमकीले मृद्भाण्ड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल **बैराठ** में है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं जो **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित है ।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति का था।
- बैराठ में पाषाण कालीन **हथियारों** के निर्माण का **एक बड़ा कारखाना** स्थित था ।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- यहाँ पर **शुंग एवं कुषाण कालीन** अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ये सभी एक मृद्भाण्ड में सूती कपड़े से बंधी मिली है।
- बैराठ सभ्यता के लोग **लौह धातु से परिचित** थे । यहाँ उत्खनन से लौहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं ।
- माना जाता है कि **हूण शासक मिहिर** कुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया ।
- **634 ई. में ह्वेनसांग विराट** नगर आया था तथा उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या **8 बताई** है ।
- बैराठ से **'शंखलिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से **मुग़ल काल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते है । यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर **बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, **हिरण तथा वनस्पति** का चित्रण प्राप्त होता है ।

5. गणेश्वर (सीकर):

- **सीकर जिले में नीम का थाना** स्थान से कुछ दूरी पर स्थित गणेश्वर नामक स्थान से उत्खनन में **ताम्र युगीन** उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थान काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- गणेश्वर को **पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता** माना जाता है। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- गणेश्वर सभ्यता 2800 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।
- गणेश्वर को **"पुरातत्व का पुष्कर"** भी कहा जाता है।

- 1583 ई. में दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ जिसमें महाराव सुरताण विजयी हुए तथा इन्होंने सिरोही दुर्ग पर अधिकार प्राप्त कर लिया।
- इस युद्ध में कवि दुरसा आढ़ा उपस्थित थे।
- महाराव सुरताण ने मारवाड़ शासक राव चंद्रसेन को अपने राज्य में संरक्षण दिया था।
- उदयभान अपने पिता महाराव अखैराज द्वितीय को कैद कर स्वयं शासक बन गया मेवाड़ शासक राजसिंह ने
- अपनी सेना भेजकर उदयभान को शासक हटाकर वापस अखैराज द्वितीय को शासक बनाया।
- 1705 ई. में महाराव मानसिंह सिरोही के शासक बने जिन्होंने सिरोही मे पक्के लोहे की तलवारें बनवाना आरंभ करवाया ।
- सिरोही की यह पक्की तलवारें मानसाही नाम से प्रसिद्ध हुई थी ।
- महाराव शिव सिंह के समय ।। सितम्बर 1823 ई. को सिरोही राज्य की सन्धि अंग्रेजों के साथ हुई थी।
- राजस्थान एकीकरण के छठे चरण में जनवरी 1950 में सिरोही का राजस्थान में विलय किया गया था जबकि । नवम्बर 1956 को आबू-दिलवाड़ा का भी राजस्थान में विलय कर दिया गया ।

मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की **सबसे प्राचीन** रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना **एकलिंगजी (शिव) का उपासक** था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को **स्वयं के राजा / ईष्टदेव** तथा **स्वयं को** एकलिंगनाथजी का **दीवान** मानते हैं। गुहिल वंश की कुल **देवी बाण** माता है। मेवाड़ रियासत के सामन्त **'उमराव कहलाते** थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे **'आसकाँ** कहते थे। मेवाड़ के महाराणा **'हिन्दुआ का सूरज'** कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है, तथा इसमें उदयपुर का **राजवाक्य** "जो दृढ़ राखैं धर्म को, तिहिं राखैं करतार" अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के संकेत देते हैं । मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर **'इजलास खास'** कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं। **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** ने इन्हें **विशुद्ध सूर्यवंशीय** क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में **गुहिल नाम** के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था । लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

  मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

राजस्थान के परमार वंश

परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है । प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई ।

परमार वंश

आबू का परमार वंश

आबू -

- परमारों का उत्पत्ति स्थल आबू को माना जाता है।

- आबू में परमार वंश का शासन था।

आबू के परमार वंश के प्रमुख राजा-

1. धूमराज (Dhumraj)
2. उत्पल राज (Utpal Raj)
3. धरणी वराह (Dharani Varah)
4. धन्धुक (Dhandhuk)
5. धारावर्ष (Dharavarsh)
6. सोम सिंह (Som Singh)
7. प्रताप सिंह (Pratap Singh)
8. विक्रम सिंह (Vikram Singh)

धूमराज -

- धूमराज आबू का राजा था।
- धूमराज को आबू के परमारो का संस्थापक माना जाता है।

उत्पल राज -

- उत्पल राज आबू का राजा था।
- उत्पल राज से आबू के परमारो की वंशावली का प्रारम्भ हुआ था।

धरणी वराह -

- धरणी वराह ने अपने राज्य को नौं भागों में बाट दिया था अतः धरणी वराह का राज्य नवकोटि मारवाड़ कहलाया।
- गुजरात के चालुक्य राजा मूलराज प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया इस समय धरणी वराह को धवल राठौड़ ने शरण दी थी।
- आबू पर मूलराज प्रथम के आक्रमण तथा धवल राठौड़ के द्वारा धरणी वराह को शरण देने की बात का उल्लेख हस्तिकुंडी अभिलेख में किया गया है।

हस्तिकुंडी अभिलेख-

- हस्तिकुंडी अभिलेख 997 ई. का है।
- हस्तिकुंडी अभिलेख राजस्थान के पाली जिले से प्राप्त हुआ था।
- हस्तिकुंडी अभिलेख धवल राठौड़ का है।

धन्धुक -

- धन्धुक आबू का राजा है।
- राजा धन्धुक के समय गुजरात के चालुक्य राजा भीम प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया था।
- इस आक्रमण में गुजरात के राजा भीम सिंह के द्वारा आबू पर अधिकार कर लिया जाता है।
- आबू पर अधिकार करने के बाद भीम प्रथम ने विमलशाह को आबू का प्रशासक बना दिया था।
- भीम प्रथम के आक्रमण के समय मालवा के भोज परमार ने धन्धुक को चित्तौड़ में शरण दी थी।
- विमलशाह ने धन्धुक तथा भीम प्रथम के बीच समझौता करवा दिया था।
- धन्धुक की पुत्री लाहिनी देवी (लाहिणी देवी) ने बसन्तगढ़ में सूर्य मंदिर तथा सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया था।
- पुनर्निर्माण को ही जीर्णोद्धार कहा जाता है।
- सरस्वती बावड़ी को लाहिनी बावड़ी (लाहिणी बावड़ी) भी कहा जाता क्योंकि सरस्वती बावड़ी का पुनर्निर्माण लाहिनी देवी के द्वारा करवाया गया था।
- बसन्तगढ़ क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।

देलवाड़ा का ऋषभदेव (आदिनाथ) मंदिर-

- विमलशाह ने देलवाड़ा में भगवान ऋषभदेव मंदिर का निर्माण करवाया था।
- देलवाड़ा क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- देलवाड़ा के ऋषभदेव मंदिर को आदिनाथ जैन मंदिर भी कहा जाता है।
- देलवाड़ा के ऋषभदेव मंदिर को विमलवसहि मंदिर भी कहा जाता है क्योंकि देलवाड़ा का ऋषभदेव मंदिर विमलशाह के द्वारा बनवाया गया था।
- कर्नल जेम्स टाड के अनुसार देलवाड़ा का ऋषभदेव मंदिर ताजमहल के बाद भारत की दुसरी सबसे सुन्दर इमारत है।

धारावर्ष -

- धारावर्ष एक तीर से तीन भैंसों को बींध देता था।
- धारावर्ष के द्वारा एक तीर से तीन भैंसों को बींध देने की जानकारी पाटनारायण अभिलेख तथा अचलगढ़ किले से मिलती है।
- पाटनारायण अभिलेख 1287 ई. का है।
- पाटनारायण अभिलेख सिरोही से प्राप्त हुआ है।
- अचलगढ़ के किले में धारावर्ष की मूर्ति लगी हुई है जिसमें धारावर्ष के द्वारा एक तीर से तीन भैंसों को बींधते हुए दिखाया गया है।
- अचलगढ़ का किला सिरोही में स्थित है।

प्रह्लादन देव -

- प्रह्लादन देव धारावर्ष का छोटा भाई था।
- प्रह्लादन देव ने गुजरात में प्रह्लादन पुर नामक नगर की स्थापना की थी।
- प्रह्लादन देव ने पार्थपराक्रमव्यायोग नामक नाटक लिखा था।
- पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के समय प्रह्लादन देव ने आबू की रक्षा की थी।

कायन्द्रा का युद्ध (1178 ई.)-

- कायन्द्रा का युद्ध 1178 ई. का है।
- कायन्द्रा क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- कायन्द्रा का युद्ध गजनी के शासक मोहम्मद गौरी तथा गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय चालुक्य के मध्य हुआ था।

- गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय की आयु कम होने के कारण गुजरात के राजा मूलराज की माँ नायिका देवी गुजरात का शासन चलाती थी।
- गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय की संरक्षिका उसकी माँ नायिका देवी ही थी।
- कायन्द्रा के युद्ध में नायिका देवी (मूलराज द्वितीय) का साथ देने के लिए नाडौल से कायन्द्रा के युद्ध में नायिका देवी ने मोहम्मद गौरी को हरा दिया था।

सोम सिंह -

- वस्तुपाल तथा तेजपाल ने देलवाड़ा (सिरोही) में नेमिनाथ जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- देलवाड़ा के नेमिनाथ मंदिर का लूणवसहि मंदिर भी कहा जाता है।
- देलवाड़ा के नेमिनाथ मंदिर को देवरानी जेठानी का मंदिर भी कहा जाता है।
- वस्तुपाल तथा तेजपाल दोनों आबू के राजा सोम सिंह के सेनापति थे।

प्रताप सिंह -

- प्रताप सिंह ने मेवाड़ के जैत्रसिंह से चन्द्रावती को छीन लिया था।
- प्रताप सिंह के मंत्री देल्हण ने पाटनारायण मंदिर का पुनर्निर्माण (जीर्णोद्धार) करवाया था।

विक्रम सिंह (Vikram Singh)-

- विक्रम सिंह के शासन काल में आबू के परमार राजा रावल तथा महारावल की उपाधियां धारण करने लगे थे।
- कालांतर में जालौर के सोनगरा चौहानों ने आबू के परमार राज्य के पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया था।
- लूम्बा देवड़ा ने परमारों से आबू तथा चन्द्रावती छीनकर सिरोही में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

मालवा के परमार :- मालवा के परमारों की मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था। इनकी राजधानी उज्जैन या धारानगरी रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग-कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़, प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग आदि इनके अधिकार में थे। मालवा के परमारों का शक्तिशाली शासक मुंज हुआ, मुंज ने वाक्पति राज, अमोघ-वर्ष उत्पलराज, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ आदि उपाधियाँ धारण की । मेवाड़ के शासक शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। उसने चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया। राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था। 'नवसाहसांकचरित' का रचयिता पद्मगुप्त और अभिधानमाला' का रचयिता हलायुध उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

मुंज के बाद सिन्धुराज और भोज प्रसिद्ध परमार शासक हुए। भोज अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक, विद्वज्जन मण्डल, समरांगण, श्रृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे। चित्तौड़ में उसने 'त्रिभुवन नारायण' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण)। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार नागदा में भोजसर का निर्माण भी परमार भोज द्वारा करवाया गया। उसने सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला बनवाई। वल्लभ, मेरुतुंग, वरुरुचि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे। भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह भी एक योग्य शासक था। वागड़ का राजा मण्डलीक उसका सामन्त था। 1135 ई. के लगभग मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई। तेरहवीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा। खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और परमार भाग कर अजमेर चले गए।

वागड़ के परमार :- वागड़ के परमार मालवा के परमार कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज थे। इनके अधिकार में डूंगरपुर-बाँसवाड़ा का राज्य था, जिसे वागड़ कहते थे। अर्थूणा इनकी राजधानी थी। धनिक, कंकदेव, सत्यराज, चामुण्डराज, विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए। चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थूणा में मण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। 1179 ई. में गुहिल शासक सामन्तसिंह ने परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ गुहिल वंश का शासन स्थापित कर दिया। अर्थूणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।

जाट वंश

- राजस्थान के पूर्वी भाग भरतपुर, धौलपुर पर जाट वंश का शासन था।
- भरतपुर के जाटवंश के कुल देवता भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण हैं।
- औरंगजेब के विरुद्ध सबसे पहला संगठित किसान विद्रोह भरतपुर तथा दिल्ली के जाटों द्वारा किया गया।
- 1669 ई. में मथुरा के जाटों ने पहला हिन्दू विद्रोह स्थानीय जाट जमींदार **गोकुल जाट के** नेतृत्व में किया जिसे **मुग़ल फौजदार हसन अली खाँ** ने दबा दिया तथा तिलपत की लड़ाई में गोकुल जाट मारा गया।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3. किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिदमल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ हैं साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादर्शी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँढोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।

अध्याय – 10

राजस्थान का एकीकरण

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि 3 जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों को सौंप दी जाएगी ।
- इन्होंने नया गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन को नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया ।
- राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे । इसलिए यह अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा ।
- अतः सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा ।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतों को आपस में मिलाकर बड़ी इकाईयां बना लेनी चाहिए या पड़ौस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए ।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे –

(1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई, मद्रास आदि । इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे ।

(2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि । इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे ।

(3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली ।

- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बेंटन योजना प्रारम्भ की।
- इस अधिनियम की धारा 14 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख सकती थी ।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में एक रियासती विभाग का गठन किया गया जिसके सचिव वी.पी. मेनन बने, क्योंकि वी.पी. मेनन उस समय लार्ड माउन्टबेटन के सलाहकार थे।
- रियासती विभाग की स्थापना 5 जुलाई 1947 को की गई ।
- भारत सरकार ने यह तय किया कि केवल वे ही रियासतें अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं जिनकी वार्षिक आमदनी एक करोड़ रूपये या जनसंख्या 10 लाख से अधिक है।
- इस मापदण्ड के अनुसार राजस्थान की केवल चार रियासतें जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर ही अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती थीं ।
- जबकि चार अन्य रियासतें अलवर, भरतपुर, डूंगरपुर एवं जोधपुर अपने आप को स्वतंत्र रखना चाहती थी ।
- संविधान के 7 वें संशोधन द्वारा 'ए', 'बी', 'सी' श्रेणी का भेदभाव समाप्त कर दिया गया तथा राजप्रमुख के स्थान पर राज्यपाल का पद सृजित हुआ । राजपूताना को बी श्रेणी का राज्य माना गया था ।
- मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह ने राजस्थान की सभी रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन का गठन करने हेतु 25-26 जून, 1946 को उदयपुर में राजपूताना, गुजरात एवं मालवा के नरेशों का सम्मेलन बुलाया । उनका राजस्थान यूनियन के गठन का प्रयास असफल रहा ।
- इसी तरह के असफल प्रयास कोटा महाराव भीमसिंह ने हाड़ौती संघ बनाकर करने का प्रयास किया ।
- कोटा महाराव भीमसिंह को आधुनिक इतिहास में राजस्थान एकीकरण का जनक कहा जाता है ।
- डूंगरपुर के शासक महारावल लक्ष्मण सिंह ने बागड़ संघ बनाने का प्रयास किया ।
- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति को सर्वप्रथम एक करने का प्रयास मुग़ल सम्राट अकबर द्वारा किया गया था ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में कुल 19 रियासतें, 3 ठिकाने (चीपफशिप / खुदमुख्तियार), लावा (जयपुर रियासत में स्थित, वर्तमान में टोंक में), कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा), नीमराणा (अलवर) तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर-मेरवाड़ा था ।
- धौलपुर व भरतपुर रियासत जाट शासकों के अधीन थी व टोंक रियासत पर मुस्लिम नवाब शासन करते थे ।
- राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़ थी जिसकी स्थापना गुहिल नामक व्यक्ति ने 566 ईस्वी में की तथा इसकी राजधानी नागदा थी। यहीं रियासत उदयपुर राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुई ।
- सबसे नयी - झालावाड़ रियासत (1835 ई.) थी । यह राजपूताना की एकमात्र रियासत थी जिसकी स्थापना एक अंग्रेज लार्ड आकलैंड द्वारा की गई थी।
- क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों के आधार पर सबसे छोटी रियासत शाहपुरा थी । राजा सुदर्शन देव उसके शासक थे ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/0yupe6

Online order करें – https://shorturl.at/pwFNP

Call करें – 9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO